

XXXII.

VĒ|NŪS| chĕr| chĕ| dĕ| s̄a| dĕ| l̄a| s̄o| n̄ ā| n̄ f̄ant :

P̄x̄r| mĕt| don| s̄ ɛ| lo| iĕ| r̄ a| k̄ī| le| ran| dra,

Ē|kre| mant| me| na| sant| ki| lui| re| tiĕn| dra. <·

Dan| mon| ker| je| le| san| ka| chĕ| de| dan-| mœ̄.

5 Mœ̄| pœ̄| vřĕt !| Ke| fe| rĕ-| je ?| dœ̄-| j' a| mon| dam

L'an| ku| zĕr ?| Je| ne| ve| le| fi| s̄ o| fan| sér.

Le| f̄ōt-il| re| se| lĕr| la| mĕ| r' o| fan| sant ?

San| br̄u| lĕr| re| se| lĕr| le| fis| ne| p̄x̄ rœ̄ :

Si| la| mĕ| re| le| se| t̄ a| p̄řĕs| j'a| rĕ-| pis :

10 Mal| viĕn| dra| de| la| Mĕ| r' ɛ| mal| de| l'an| fant.

œ̄s̄ si| mœ̄| dĕ| se| lant| se| trĕi| tre| kar| son,

Par| lui| pis| ke| ja| mĕs| tre| tĕ| me| vĕ| rĕ. <·

Tiĕn| bon,| tiĕn| bo| n a| m̄x̄r :| ne| sōr| de| mon| ker,

Plu| t̄ōt| san| mi| le| m̄ōrs| ke| vi| vre| san| tœ̄ :

15 Se| le| mant (| je| te| pri)| mo| dĕ| re| ton| fe. ·><· <·